मोक्ष मार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

Class 34

पुद्गल द्रव्य की विशेषताएँ

तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथराज में पंचम अध्याय के माध्यम से द्रव्यों के स्वभाव, गुण और पर्यायों के बारे में बताया जा रहा है। पुद्गल द्रव्य का विशेष रूप से वर्णन प्रारम्भ हुआ है। स्पर्श, रस आदि यह पुद्गल के गुण बताये गये। शब्द, बंध, सूक्ष्मता, स्थौल्य आदि यह सब पुद्गल की पर्यायें बतायी गयी। इस तरह से अपने गुण और पर्यायों के साथ में जो पुद्गल द्रव्य है वह निरन्तर किसी ना किसी रूप में परिणमन करता हुआ इस विश्व में इस ब्रह्माण्ड के अन्दर बना रहता है। उसी पुद्गल द्रव्य की कुछ और विशेषताएँ हैं। पुद्गल द्रव्य के कुछ भेद होते हैं वह पुद्गल अपने मूलत: कितने भी भेद भाव और कितने भेद स्वरूप वाला है यह आगे के सूत्र में बताया जा रहा है

अणवःस्कंधाश्च **॥5.25॥**

पुद्गल के दो प्रकार के मुख्य भेद हैं एक अणुओं के रूप में जिसे हम atom कहते हैं और एक स्कन्धों के रूप में जिन्हें हम molecules कहते हैं। यहाँ पर अणु और स्कन्ध दोनों के साथ में बहुवचन का प्रयोग किया है। इससे यह बताया गया है कि अणु भी बहुत से होते हैं

और स्कन्ध भी बहुत प्रकार के होते हैं। “च” शब्द से उन अणुओं को और स्कन्धों का जो समुच्चय है वो भी जानना और यह भी जानना कि पिछले सूत्र में जो पर्यायों का वर्णन किया गया है। शब्द बंध आदि रूप जो पर्याय बतायी गयी हैं यह सभी पर्याय इन्हीं पुद्गलों के भेद रूप ही होती हैं। और यह सभी पर्याय स्कन्ध रूप होती हैं। और इन पर्यायों का जो बनना होता है वो अणुओं के माध्यम से ही बनना होता है।

अणु और स्कंध किसे कहते है?

तो हम समझ सकते हैं कि अणु और स्कन्ध यह दोनों ही भेद पुद्गल के जो उपलब्ध होते हैं यही वो बडे बडे भेद हैं जिनके माध्यम से पुद्गल को जाना जाता है। यह भी कह सकते हैं कि पुद्गल का जो सूक्ष्मतम भेद है वो अणु है और जो उत्कृष्टतम भेद है वो स्कन्ध है जिसे महास्कन्ध के रूप में भी कहीं कहीं कहा जाता है। अणु अपने आप में एक प्रदेशी परमाणु है। एक atom जिसमें किसी भी प्रकार की कोई आकृति होते हुए भी उसका कोई middle point नहीं उसका कोई beginning नहीं उसका कोई end नहीं। एक ऐसा अविभाज्य कण जिसका कि हम कोई आदि, अन्त और मध्य नहीं कह सकते हैं। कोई भी चीज होती है तो उसके लिये हमें दिखायी देता है भई यह चीज यहाँ से इसका अगर हम यह आदि बना लेंगे तो यह अन्त हो जायेगा, यह इसका middle हो जायेगा। परमाणु में एक विशेषता यह है कि इसका कोई भी beginning नहीं कोई भी उसका middle point नहीं, कोई उसका end point नहीं। जो वो है वो एक particle के रूप में है। आकाश का जो एक प्रदेश है उतना ही स्थान वह घेरता है। और उस परमाणु के अन्दर अनेक तरह के गुणधर्म

पाये जाते हैं। पुद्गल के सभी गुण उसके अन्दर हैं। चूंकि वह पुद्गल का ही एक भेद है इसलिये पुद्गल में जो गुण पाये जाते हैं स्पर्श, रस, गंध आदि वो सब गुण इन अणुओं में भी हैं और स्कन्धों में भी हैं यह भी इस 'च' शब्द के द्वारा जानना। और जो पर्याय बनती हैं वो पर्याय भी इन्हीं स्कन्धों के माध्यम से बनती हैं यह भी इससे जानना।

एक परमाणु के अन्दर एक क्षण में केवल दो गुण होंगे

अणु के अन्दर भी स्पर्श है, रस है, गंध है और वर्ण है। जो आपको आठ प्रकार के स्पर्श बताये थे उन आठ प्रकार के स्पर्शों में एक परमाणु के अन्दर यदि स्पर्श गुण रहता है तो वह केवल दो गुण रहते हैं। एक परमाणु के अन्दर एक क्षण में एक बार में स्पर्श के केवल दो गुण होंगे। क्यों होंगे ? क्योंकि स्निग्ध और रूक्ष यह दो गुण हैं इनमें से एक परमाणु में एक ही गुण होगा या तो वो स्निग्ध गुण वाला होगा या रूक्ष गुण वाला होगा। इसी तरीके से शीत और उष्ण इसमें से भी केवल एक ही गुण होगा या तो वो शीत गुण वाला होगा या उष्ण गुण वाला होगा। अन्य जो आपको स्पर्श गुण बताये गये हैं गुरू, लघु यानि हल्का भारी और कठोर और मृदु यह स्पर्श परमाणु के अन्दर नहीं पाये जाते हैं। यह गुण परमाणु के अन्दर नहीं पाये जाते हैं। स्पर्श के इन आठ प्रकार के गुण में गुणों की भिन्नताओं में से केवल दो प्रकार के ही गुण स्पर्श के परमाणु के अन्दर पाये जाते हैं। यह किसमें पाये जायेंगे फिर हल्का भारी कौन होगा कठोर और मृदु कौन होगा, तो यह स्कन्ध होगा परमाणु नहीं होगा।

परमाणु के पांच गुण

किसी भी परमाणु को हम यह नहीं कह सकते हैं कि यह बहुत heavy है, परमाणु heavy नहीं होता। ना हम यह कह सकते हैं कि बहुत ही light weight वाला है उसमें light form या weightness यह सब चीजें उसमें नहीं होती। यह परमाणु बहुत soft है या hard है यह भी उसमें नहीं कहा जा सकता। परमाणु में या तो स्निग्धता है या रूक्षता है या शीत है या उष्णता है। इन दो-दो में से एक एक गुण उस परमाणु के अन्दर होगा यह उसका स्पर्श गुण के दो भेद हो जाते हैं। रस में से कोई भी एक रस एक परमाणु के अन्दर हो सकता है जो पांच प्रकार के रस बताये हैं उनमें से एक रस एक परमाणु के अन्दर होगा। किसी भी taste वाला वो परमाणु हो सकता है। गंध में से भी कोई भी दो में से एक प्रकार की गंध वाला एक परमाणु होगा और वर्ण में से भी पांच प्रकार के जो वर्ण बताये जाते हैं उनमें से भी एक वर्ण वाला ही एक परमाणु होगा। इस तरह से अगर हम पुद्गल परमाणु के गुणों को जाने तो आपके लिये केवल रस, गंध और वर्ण इनके तीन और स्पर्श के दो ऐसे पांच गुण ही उस परमाणु में मिलेंगे। यह परमाणु की अपनी जो quality है ये उसके अन्दर जो गुणों का समावेश है ये उसके बारे में बताया गया है।

परमाणु का आकार क्या है ?

परमाणु की पर्याय क्या? परमाणु के द्रव्य की स्थिति क्या? वो भी जानने योग्य है क्योंकि जो द्रव्य है वही गुणों को धारण करता है। और जहाँ द्रव्य और गुण होते हैं वहाँ उस गुणों की पर्यायें भी होती हैं। तो यह जो परमाणु के अन्दर द्रव्यपना है वह द्रव्य होने के कारण से उस परमाणु को हम किस रूप में माने। एक single atom जो होता है उसकी

shape क्या होती है वो shapeless होता है या उसकी कोई shape होती है। आखिर वह पुद्गल का परमाणु है पुद्गल का अंश है तो उसकी कोई ना कोई shape तो होनी ही चाहिये या फिर अगर हम यह कहें कि कल जैसे बताया था कि जो दस प्रकार की पर्यायें हैं उनमें संस्थान नाम की पर्याय होती है उसमें इत्थंभूत संस्थान होता है और एक अणित्थंभूत संस्थान होता है। यानि अगर हम उसको कोई triangle, rectangle या किसी भी तरीके का glob किसी भी तरीके का कोई भी shape दे पाये तो वह इत्थंभूत कहलायेगा और अणित्थंभूत होता है कि जिसका कोई shape particular ना हो उसको अणित्थंभूत कहते हैं। अगर उस पुद्गल परमाणु के अन्दर किसी भी प्रकार की कोई आकृति बनती है तो वह आकृति भी आचार्यों ने बतायी है और वह आकृति के विषय में आचार्य एकमत नहीं होते हैं। परमाणु के विषय में कोई आचार्य कहते हैं कि वो गोल होता है, कोई आचार्य कहते हैं कि वह चौकोर होता है, कोई आचार्य कहते हैं वो छह दिशाओं वाला भी होता है। परमाणु के विषय में अलग अलग अवधारणाएँ मिला करती हैं। लेकिन इतना जरूर है कि उस परमाणु में एक प्रदेश के अलावा और कोई दूसरी चीज नहीं है।

कार्य परमाणु और कारण परमाणु किसे कहते है ?

परमाणु है और उसको घेरने के लिये जो उसका सबसे छोटा सा मात्रक होना चाहिये वो प्रदेश वही उसके पास अपने अन्दर के गुणों के साथ में रहते हुए जो अपने अन्दर एक energy field बना लेता है उसी से वह स्कन्धों तक की यात्रा करता है। तो परमाणु अपने आप में दोनों रूप में होता है। एक कार्य परमाणु भी कहलाता है एक कारण परमाणु भी कहलाता है। कारण परमाणु उसे कहेंगे जिससे परमाणुओं से मिल करके स्कन्ध बनते हैं

तो वह परमाणु कहलायेंगे कारण परमाणु जिनके माध्यम से स्कन्ध बन रहे हैं। और कार्य रूप परमाणु वो कहलायेंगे जो स्कन्धों के टूट करके कार्य के साथ में उत्पन्न हुए हैं तो वह कार्य रूप परमाणु कहलायेंगे। यह परमाणुओं के अन्दर भी हम अनेक तरह के गुण धर्मों का समावेश कर सकते हैं। वह परमाणु भी द्रव्य है उसकी अपनी पर्याय है द्रव्य होता है तो द्रव्य की अपेक्षा से वो परमाणु नित्य भी होता है और पर्याय की अपेक्षा से वह परमाणु अनित्य भी होता है। तो परमाणु के अन्दर यह नित्यतता अनित्यतता, कारण कार्य की व्यवस्था, भेद अभेद दृष्टि, यह सब हम परमाणु के अन्दर भी लगा सकते हैं और इस तरह से इस परमाणु के बारे में जो आचार्यों ने बताया है वह हमेशा ध्यान में रखने योग्य है कि यही परमाणु वास्तव में वह अविभाज्य पुद्गल का सबसे सूक्ष्मतम अणु है जिसका कि कोई दूसरा part नहीं किया जा सकता। है ना, यह आँखों से देखने में नहीं आ सकता, इसको कोई पकड भी नहीं सकता और इसका कोई भी तरीके का विभाजन नहीं होने के कारण से इसके point भी नहीं बन सकते इसके और कोई fraction भी नहीं हो सकते हैं। जब यह स्थिति परमाणु की स्पष्ट हो जाती है तब number आता है स्कन्धों का।

आचार्यो ने स्कन्ध के छह प्रकार बताए है

परमाणुओं के मिलने से स्कन्ध बनते हैं एक परमाणु एक प्रदेश वाला है अगर उसमें दूसरा परमाणु मिल गया तो वह स्कन्ध कहलायेगा। दो परमाणु वाला वो एक स्कन्ध कहलायेगा। दो परमाणु मिल गये तो वो तीन परमाणु वाला एक स्कन्ध कहलायेगा। तीन मिल गये तो चार परमाणु वाला वो स्कन्ध कहलायेगा। ऐसे स्कन्ध की formation संख्यात, असंख्यात, अनन्त, अनन्तानन्त परमाणुओं के साथ में चलती रहती है। जब

यह स्कन्ध बन जाते हैं तो वो स्कन्धों का भी विभाजन हमें बताया जाता है कि दुनिया में जितना भी हमें स्कन्ध दिखायी देता है वह सारा का सारा इन्हीं पुद्गल अणुओं का समूह है और उस समूह को भी हम अलग अलग रूपों में देख सकते हैं। छह प्रकार का इसका dividation किया जाता है कितने प्रकार का ? छह प्रकार का।पुद्गल के जो स्कन्ध हैं इन स्कन्धों को छह प्रकार से आचार्यों ने समझाया है कि दुनिया में जो कुछ भी दिखायी देने वाला यह पुद्गल है वह हम छह रूपों में देख सकते हैं।

1. एक तो पुद्गल वह है जो बहुत ही स्थूल स्थूल रूप में हैं यानि बहुत ही gross gross nature वाला है और वह स्थूल स्थूल को हम बादर बादर भी कह सकते हैं कहीं कहीं इसका नाम बादर बादर भी मिलता है कहीं कहीं इसको स्थूल स्थूल भी कहा जाता है। इसके लिये यह बताया गया कि ऐसा कोई भी स्कन्ध जिसके हमने दो टुकडे कर दिये या कई टुकडे कर दिये और फिर उसको हमने उसके साथ में रख दिया तो उसके साथ में फिर से वो मिल ना पाये फिर से वो combined हो ना पाये। तो उसको कहा जायेगा स्थूल स्थूल।

परमाणुओं के मिलने से स्कन्ध बनते है

जैसे कोई भी चीजें, चाहें वह लकडी की हों, चाहें पत्थर की हों, प्लास्टिक हो, कागज हो, कपडा हो, यह सब जब एक बार इसके पीस हो जाते हैं तो उनके पास में रखने पर भी वो अपने आप जुडता नहीं है। किसी दूसरे adhesive matter से उसको जोडेंगे तो वह जुड जायेगा यह अलग बात है लेकिन वह अपने आप जुडने वाली चीज नहीं होती आँखों से देखने में आती है, हाथों से भी ग्रहण करने में आती है इसलिये इसको स्थूल स्थूल शब्द

के द्‌वारा विभाजित किया गया।

2. दूसरे प्रकार के पुद्‌गल स्‌कन्ध वो होते हैं स्‌थूल, केवल स्‌थूल होते हैं जिन्हें क्‌या कहा गया केवल स्‌थूल only gross nature वाले। उन स्‌थूलों में क्‌या होता है कि वो हमारे लिये दिखायी भी दे रहे हैं, पकड में भी आ रहे हैं लेकिन अगर हम उनको अलग कर देते हैं और फिर उसी में वो चीज मिला देते हैं तो वो अपने आप को mix up कर लेते हैं। जैसे जल होता है पानी निकाला पानी से पानी अलग हो गया पानी में पानी फिर मिला दिया वो फिर उसमें मिल गया। घी है घी में से घी निकाला अलग हो गया फिर उसी में मिला दिया उसी में mix up हो गया। तेल है इसी तरीके से, तो यह सभी जो पुद्‌गलों के स्‌कन्ध हैं यह सब उन स्‌कन्धों से अलग quality वाले हैं जो पृथ्वी कपडा इत्यादि के रूप में हैं। दुनिया में केवल जितने भी प्रकार के पुद्‌गल स्‌कन्ध हैं वो सब या तो स्‌थूल स्‌थूल के रूप में आ रहे होंगे या स्‌थूल के रूप में दिखायी दे रहे होंगे इन्हीं स्‌थूलों को बादर भी कहा गया है।
3. तीसरा भेद आचार्यों ने किया स्‌थूल सूक्ष्म, Gross plus settle उसके साथ में स्‌थूलता इसलिये है क्‌योंकि वह दिख रहा है सूक्ष्म इसलिये है कि वो पकड में नहीं आ रहा है। ऐसी चीज बताओ जो दिखती हो पकड में नहीं आती हो ,एक धूप कह रहे हैं, एक छाया कह रहे हैं, क्‌या माना जाये हैं दोनों ही है तो दोनों ही मान लेते हैं। तो जो भी पुद्‌गल स्‌कन्ध दिखने में आ रहा हो धूप दिखने में आती है, कोई भी हमें छाया दिखायी देती है वो shadow भी हमें दिखने में आती है पकड में नहीं आती है। ना हम धूप को पकड पाते, ना हम छाया को पकड पाते इसी तरीके से जो darkness है वो भी, किसी भी तरीके की कोई भी light चन्द्रमा की light हो, चांदनी

हो कुछ भी हो वह दिखायी तो देगी लेकिन वह हमारे हाथों से ग्रहण करने में नहीं आयेगी तो उसको कहा गया, स्थूल cum सूक्ष्म यह तीसरे तरह का पुद्गल स्कन्ध हो गया। जिसे हम बादर सूक्ष्म भी कह सकते हैं और इस तरह के यह पुद्गल स्कन्ध भी हमारे लिये दिखायी देते हैं। काम में आते हैं और जो भी यह पुद्गल स्कन्ध हैं यह सब अपने स्कन्धों को उन्हीं तरह के पुद्गलों के माध्यम से जो उसके योग्य होते हैं बना लेते हैं।

4. चौथा हो गया सूक्ष्म स्थूल इसमें क्या हो गया settle cum gross यानि सूक्ष्मपना भी है और स्थूल पना भी है। सूक्ष्मपना इसलिये है क्योंकि अब यह दिखायी नहीं देगा। स्थूल इसलिये है क्योंकि यह किन्हीं ना किन्हीं इन्द्रियों से ग्रहण करने में आ जायेगा सिवाय चक्षु इन्द्रिय को छोड़कर के। ऐसे objects जो नेत्र इन्द्रिय के विषय ना बने अन्य इन्द्रिय के विषय बने, यानि जिनमें स्पर्श, रस और गंध की प्रमुखता हो वो सभी प्रकार के पदार्थ इन्द्रियों से ग्रहण करने में आयेंगे लेकिन आंखों से देखने में नहीं आयेंगे जैसे कि घ्राण इन्द्रिय का विषय सुगन्ध है तो गंध कभी देखने में नहीं आती लेकिन घ्राण इन्द्रिय से ग्रहण करने में तो आती है। रस भी अगर आप देखोगे तो देखने में नहीं आता रस दिखायी देता है, रस दिखायी नहीं देता पदार्थ दिखायी देता है पदार्थ में यह रस है यह हमारी धारणा होती है इसलिये हमें दिखायी देता है कि यह पदार्थ मीठे रस वाला है, यह पदार्थ खट्टे रस वाला है लेकिन रस दिखायी नहीं देता। क्या दिखायी देता है? सुन रहे हैं। मतलब कि शक्कर दिखायी दे, आपको मीठी चाशनी दिखायी दे तो आप क्या समझोगे? हैं, जो उसमें मीठा रस है वो रस दिखायी नहीं दे रहा है दिखायी तो पदार्थ ही दे रहा है। इतना एकमेक हमारे

लिये हो जाता है ज्ञान में और ज्ञेय में कि हमें पता ही नहीं रहता इस ज्ञेय में रस है कि ज्ञान में रस है। तो रस जो हमें है वो तो उस ज्ञेय के अंदर कभी हमारे लिये पकड़ में ही नहीं आता वो जब तक हमारी इन्द्रियों के स्पर्श के माध्यम से या उस इन्द्रिय के contact में नहीं आये तब तक वो रस उसका ग्रहण करने में नहीं आता। अन्यथा कोई भी पदार्थ को आप देख करके उसका रस पहचान लेते हैं।

Class 35

सूक्ष्म स्थूल के उदाहरण

चलो कोई बात नहीं आप कहोगे कि चाशनी का तो रस हमें पता है चाशनी मीठी होती है मधुर रस वाली है आपके सामने नींबू रख देंगे तो आप कहोगे यह खट्टे रस वाला है। अब कभी आपके सामने उन दोनों चीजों को एक इस तरीके से समपास से मिलाया जाये कि आपको पता ना हो और उसमें दोनों चीजें मिली हों तो क्या आप बता पाओगे? यह तो आपने यह देख लिया यह जान लिया कि नींबू खट्टा होता है क्योंकि उसमें खट्टा रस होता है लेकिन रस नहीं दिखायी दे रहा नींबू में खट्टेपन का हमनें आरोप कर लिया कि नींबू खट्टा ही होता है और चाशनी मीठी ही होती है यह हमारी धारणा में है। अगर हमने उसमें कुछ और भी मिला दिया है तो उसका रस आपको समझ नहीं आयेगा अगर मानलो उस चाशनी में कोई कडवी चीज मिला दी जाये तो आपको वो चाशनी तो मीठी ही दिखेगी लेकिन खाने में कडवी भी लगेगी अगर उसमें कोई कडवा रस भी मिला दिया गया हो। तो रस हमें दिखायी नहीं देता, स्पर्श भी हमें दिखायी नहीं देता ग्रहण करने में आता है केवल।

हवा है हवा हमारे लिये स्पर्श के माध्यम से ग्रहण करने में आती है दिखायी नहीं देती इसलिये वह सूक्ष्म स्थूल इन पुद्गल के स्कन्धों में विभाजित हो जाती है। यह जो विभाजन है यह यहाँ तक तो हमारे एक तरीके से उपभोग में भोग में आने वाली चीजों के साथ जुड जाता है और जिन चीजों से हमारा परिचय है उनसे हम समझ भी लेते है समझा भी लेते हैं। इसके बाद के जो विभाजन है वो आपको समझने पडेंगे आगम से श्रद्धान से। सूक्ष्म स्थूल के बाद number आता है

5. सूक्ष्म का only settle types के जो पुद्गल हैं वो सूक्ष्म रह गये केवल सूक्ष्म। तो सूक्ष्म में क्या हुआ अब ऐसी चीजें जो ना हमारे लिये देखने में आ रही ना पकडने में आ रही वो सूक्ष्म हो गयी। कर्म परमाणु इन्हें हम ना देख पाते हैं ना पकड पाते हैं। कर्म परमाणु की तरह ही अगर हम और भी तरह की वर्गणाएँ देखें या और भी तरह के परमाणुओं के समूह जो वर्गणाएँ है जो कि हमारे लिये दिखायी नहीं देती लेकिन जानने में आती है आगम से श्रद्धान करने में आती हैं उन सभी प्रकार की वर्गणाएँ भी इसी सूक्ष्म पुद्गल में ही घटित हो जायेंगी। भाषा वर्गणाएँ कभी आपको दिखायी नहीं देती हैं। हम जो शब्द बोल रहे हैं वह भाषावर्गणाएँ शब्दों के रूप में परिवर्तित हो रही हैं तो भाषा वर्गणाएँ भी कभी पकड में नहीं आती। मन की वर्गणाएँ जिनसे मन बनता है वो मनोवर्गणा भी कभी पकड में नहीं आती। और अगर वास्तव में देखा जाये तो जो औदारिक आदि शरीर हैं यह शरीर भी जिन वर्गणाओं से बनते हैं वो वर्गणाएँ कभी पकड में नहीं आती, पुद्गलों के स्कन्ध कभी पकड में नहीं आते। हमें जो दिखायी देता है पकड में आता है तो यह शरीर और शरीर के अवयव हैं लेकिन जो वास्तव में पुद्गल के जो स्कन्ध हैं जिनसे ये शरीर बन रहा है वो जो

वर्गणाएँ हैं अनन्त अनन्त परमाणुओं वाली वो तो हमारे लिये फिर भी पकड में नहीं आती। तो यह सब क्या कहलायेंगी वर्गणाएँ इन्हें हम बोलेंगे सूक्ष्म जो भी यह पुद्गल की वर्गणाएँ हैं यह सब सूक्ष्म रूप को धारण करने वाली हैं

6. और सूक्ष्म सूक्ष्म फिर एक last भेद होता है जिसमें यह परमाणु ही या परमाणु के पहुँचने तक और भी ऐसी वर्गणाएँ होती हैं जो द्विप्रदेशी वर्गणाएँ हैं संख्यात प्रदेशी वर्गणाएँ हैं या कर्म वर्गणाओं से नीचे परमाणु तक आने के बीच में जितनी भी वर्गणाएँ होंगी वो सब सारी की सारी सूक्ष्म सूक्ष्म भेद में आ जाती हैं। हाँ, कर्म से भी जो सूक्ष्म होते हैं। ऐसे पुद्गलों के स्कन्ध और अभी परमाणु नहीं बन पायें हैं उनके बीच में भी बहुत सारी यह वर्गणाएँ होती हैं। उन सबका समूह भी यहाँ पर यह सूक्ष्म सूक्ष्म के रूप में कहलायेगा। समझ में आ रहा है। यह सब पुद्गलों का छह प्रकार से विभाजन हो जाता है।

विश्व की प्रत्येक चीज चार स्कन्धो में विभाजित है।

इसके अलावा आप यह देखो अब यह जानने कि कोशिश करो कि अगर हम किसी भी तरह का कोई पुद्गल देख रहे हैं भोग रहे हैं क्या इन छह भेदों से कहीं बाहर हो रहा है? एक बार इस तरीके कि कोशिश कर ली जाये, क्या सुन रहे हो? जो भी चीज आपको दिख रही है, माईक हो, चाहें कपडा हो, चाहें पुस्तक हो, चाहें चौकी हो, चाहें धरती हो, चाहें चटाई हो चाहें किसी भी तरीके की घडी हो, दिवारें हों कोई भी चीज हो आपको कौन सी चीज ऐसी है जिसकी कि विभाजन इस पुद्गल में हम नहीं कर सकते हों। या जो भी चीज हमारे लिये ग्रहण करने में आ रही हो पृथ्वी हो जल हो अग्नि हो वायु हो वनस्पति हो यह सब कौन से

स्कन्धों में आ जायेंगे इन्हीं छह में से चार स्कन्धों में यह समझ लो आचार्यों ने दुनिया को बांट दिया इतना बडा दुनिया का पूरे विश्व का पुद्गल का classification एक दृष्टि में कर देना ये सर्वज्ञ के अलावा कोई नहीं कर सकता है। आज तक का कोई scientist भी नहीं कर पाया।

scientist तो क्या बोलता है जो भी हमारे पास में किसी भी तरह के पदार्थ होते हैं वह या तो ठोस या तो द्रव्य या गैस लेकिन इसमें भी पूरा का पूरा विभाजन नहीं हो पाता छाया को आप क्या कहोगे, छाया ना ठोस है, ना द्रव्य है, ना गैस है, यह light है ,darkness है यह सब क्या है यह ना ठोस है ना द्रव्य है ना गैस है। बहुत सी चीजें हैं वायु को भी आप क्या कहोगे वायु भी ना ठोस है, ना द्रव्य है ना गैस है। समझ आ रहा है। science एक तरीके से किसी भी चीज का ना तो perfect definition ना classification कर नहीं पाया है। बस करने जैसा लगता है। हाँ बहुत कुछ जान लिया है बता दिया है। तो यह जो हमारे पास में knowledge है इसको समझें कि जब तक हम अपने ज्ञान को इन्द्रियों से हटा करके अनिन्द्रिय रूप में नहीं ढाल लेते हैं और जो ज्ञान अतिन्द्रिय रूप में नहीं होता वह ज्ञान कभी भी सब चीजों को एक साथ नहीं देख सकता, जान सकता। तो जो scientist की knowledge होती है वो सारी की सारी senses पर depend करती है सब sensual knowledge है वो। जो sense के beyond है वो तो उनके पास में कभी होता ही नहीं और उसी कारण से वो कभी इन सब चीजों का classification एक साथ कर नहीं पाते।

तो आप देखें दुनिया की कोई भी चीज उठा लो, चाहे ठोस ले लो चाहे द्रव्य ले लो, चाहे गैस ले लो वो सब इन चार भेदों में दुनिया बट गयी है। स्थूल स्थूल, स्थूल, स्थूल सूक्ष्म और

सूक्ष्म स्थूल यह कितना अच्छा विभाजन है जो भी हमें दिखायी दे रहा है matter जो हमारी आँखों से दिखने लायक है और जिसको हम ग्रहण भी करते हैं या किसी भी इन्द्रिय का जो विषय बन रहा है वो सारी इन्द्रिय का विषय इन चार चीजों में आ जाता है। और जो सूक्ष्म बचा जो हमें दिखायी नहीं देता लेकिन काम कर रहा है वो सूक्ष्म सूक्ष्म और सूक्ष्म में चला जाता है। जीव अभी इससे भिन्न है अभी तो यह केवल पुद्गल का काम चल रहा है। आप देखें कि गर्भ में जब जीव आता है तो उसके पास में क्या होता है क्या ले करके आता है कुछ नहीं होता उसके पास। सिर्फ वह जीव अपनी ही स्वयं कर्मों की अपनी ही कारणता से वह शरीर को बनाता है और शरीर बनाने के योग्य जितना भी यह उसको matterial मिलता है सब उसको अपने योगों से मिलता है अपने नाम कर्म से मिलता है पर्याप्ति प्राणों के जो कार्य है उनसे मिलता है और ऐसा करते करते वह इतना स्थूल शरीर बना लेता है। कुछ नहीं होता उसके पास में वहाँ लेकिन धीरे धीरे वह सब वहाँ पर उसके ऐसे accumulate कर लेता है कि उसे खुद भी नहीं पता होता वो क्या कर रहा होता है और सब होता जाता है दिखता जो है वो अलग रूप में दिखता है वो कभी आपको शरीर के रक्त ,चर्म इनके रूप में दिखायी देगा लेकिन जो बन रहा है जिससे जो raw material है वो तो आपको नहीं दिखायी दे रहा ये तो product दिखायी दे रहा है। यह तो जो बन गया product हो गया, यह तो Raw material जिससे बन रहा है वो तो invisible है अभी भी, तो वो भी अगर हम अनुमान लगायें तो सूक्ष्म जो भेद किया पांचवे number का वो यह Raw material है जिससे कि यह body formation होता है वो सूक्ष्म में आयेगा।

भाषा वर्गणाएँ स्थूल सूक्ष्म है

हम बोल रहे हैं हमारे वचन भाषा कि वर्गणाएँ जिनको हम पकड़ नहीं पा रहे हैं और वो हमारे लिये अनुमान से सिद्ध हो रही है कि वचन जो कानों में सुनाई पड़ रहे हैं वो शब्द उन भाषा रूप पुद्गलों से बने हुए हैं क्योंकि यह पुद्गल के अलावा और कोई चीज नहीं है तभी तो यह पुद्गल से बाधित हो जाती है। अगर यहाँ पर तीव्र हवा चलने लग जाये तो देखो हवा ही उस शब्द को उडा ले जाती है। आप यहाँ पास में खडे हो तो आपको सुनाई ही नहीं पड़ेगा कि हम क्या बोल रहे हैं। नहीं समझ में आ रहा, जब तूफान चले, तीव्र हवा हो, तो आप पास में भी खडे हो तो हम कुछ बोलें तो आपको सुनाई नहीं पड़ेगा। मतलब हवा ही शब्द को उड़ा ले जाती है। इसी से सिद्ध होता है कि शब्द भी पुद्गल है। हवा ही उसको उड़ा ले जा रही है। हवा में ही शब्द नहीं तैर पाता है। हम यहाँ से आवाज दें अगर कोई मतलब बहुत ज्यादा कोई घनीभूत स्थान हो, समझ आ रहा है, तो उस स्थान में अगर यहाँ पर मान लो दस लोग बैठे हो और सब आपस में बातचीत कर रहे हो और एक व्यक्ति उनमें से कोई कुछ कहे तो उसकी आवाज दसवें व्यक्ति तक नहीं पहुँच पाती क्योंकि उन सबकी आवाजों से भी वो आवाज बाधित हो रही है। यानी शब्द, शब्द से बाधित होता है। इसको बोलते हैं science जो शब्द है, शब्द से भी बाधित हो रहा है शब्द है वो दूसरी हवा दीवारें और दूसरी चीजों से भी बाधित हो रहा है। तो यह सब पुद्गल है।

हम शब्द को नहीं अर्थ को पकड़ते हैं।

लोग अभी शब्द के बारें में अभी समझ नहीं पाये यह सब पुद्गल है पुद्गल की पर्याय है और इस पुद्गल की पर्याय को भी अगर हम देखें तो यह शब्द रूप पुद्गल की पर्याय हमेशा क्षणवर्ती ही रहती है बस आपके कान में गया शब्द तो शब्द तो चला गया अब यह मत

समझना कि शब्द हमारे चुभ गया कि भीतर चला गया यह तो आपने उसका मतलब जो कहना चाहिये था। अर्थ था उसको आप पकड के बैठ गये शब्द तो कहीं नहीं बचा शब्द तो कान के पर्दे के पास तक उसकी यात्रा है बस उसके बाद में बस उसका अस्तित्व कुछ नहीं है, वो दूसरे रूप में चला गया वो तो, गया काम से। समझ आ रहा है ना, जो फिर है बाद में वो सब हमारा ज्ञान है धारणा है जिसको हमने पकड के रख लिया है तो यह सब चीजें इसी सूक्ष्म वाले भेद में आ रही हैं दुनिया का कोई भी तरीके का atom उससे relate करने वाला, उसका कोई भी तरीके का कोई भी atomic field जिसे आज का science quantum field कहता है, quantum energy कहता है वो सारा का सारा इन्हीं भेदों के अन्तर्गत समा जाता है और इसमें से जो सूक्ष्म भेद है सूक्ष्म सूक्ष्म। उसकी पकड तक तो वो science अभी तक पहुँचा ही नहीं और सूक्ष्म सूक्ष्म की तो बात ही क्या करना। अब atom तक पहुँचना तो तब होगा जब स्कन्धों का पार पा लिया हो। मैं यहाँ से यह बात बताना चाह रहा हूँ जो science आज जिसे atom कह रहा है atom कह रहा है वो atom उसकी पकड में तब आयेगा जब वो इतनी सूक्ष्मता की पहली चीजें पकड लिया हो। नहीं समझ आ रहा ?

स्कन्धो के बाद अणु शुरू होता है।

Science ने आज तक यह नहीं पाया यह body formation होता कैसे है ? किन चीजों से body बन रही है ? बन रही है बनने के बाद उसका subdisaction करना और बनने के बाद उसके सब तरीके के गुणा भाग लगा करके उसमें उसको ठीक करना, यह करना वो करना यह अलग चीज हो गयी लेकिन यह बनती किस raw material से है यह कोई

scientist बताये हमें। तो जब इसी body को बनाने वाले ये जो अनन्तानन्त पुद्ग्रल परमाणुओं के जो स्कन्ध हैं जिनका कि परिणमन सूक्ष्म रूप सूक्ष्म सूक्ष्म रूप में हो रहा है जब यही अभी पकड़ में नहीं आ रहा तो जो सूक्ष्म रूप पुद्गल का परिणमन हो रहा है जो कर्म परमाणुओं से भी सूक्ष्म है अभी वो भी पकड में नहीं आ रहे तो उसके बाद में जो अणु का number आ रहा है वो अणु कहाँ से पकड़ में आ जायेगा। वो atom कहाँ से पकड़ में आ जाएगा यह बताने के लिये बता रहा था। समझ में आ रहा है

Class 36

सर्वज्ञ के अलावा एक साथ विश्व के बारे में कोई भी नहीं बता सकता

हम कह तो देते हैं science भी atom कहता है हम भी atom कह रहे हैं वो atom क्या है वो तो बहुत बडा अभी अगर science ने पकड़ लिया है तो वह कम से कम वो स्थूल सूक्ष्म की श्रेणी में तो आया स्थूल स्थूल नहीं है स्थूल नहीं है चलो कोई बात नहीं स्थूल सूक्ष्म तो होगा, कुछ तो होगा, सूक्ष्म भी नहीं है और सूक्ष्म सूक्ष्म भी नहीं है और यह सब स्कन्धों के भेद हैं। इसके बाद अणु शुरू होता है atom इसके बाद में है। तो science ने जिस atom को atom समझ रखा है वो atom भी पूरा नहीं है उसके पकड़ में। तभी उसके तरह तरह के और भी Nano atom, है ना तरह तरह के उसके नाम phonon और तरह तरह के Nucleons तरह तरह के उसके नाम Neutrons इत्यादि सामने आते हैं। जो कि उस पुद्गल परमाणु के ही अनेक अनेक तरह के ही कण हैं उसी के बने हुए अवयव हैं। तो आपको यह बताना चाह रहा हूँ कि इस science से आप देखो कि atom कहाँ है, ये तो

अभी छह प्रकार का तो स्कन्धों का ही विभाजन है इसके बाद जो चीज आयेगी वो है अणु। तो जब स्कन्धों पर ही हमारी पकड छूट गयी सूक्ष्म सूक्ष्म पर और सूक्ष्म पर यहीं पर हमारी पकड छूट गयी तो पुद्गल के परमाणुओं तक हमारी पकड पहुँचेगी कैसे? यह अगर science समझे तो समझा सकते हैं कि अभी science को अभी बहुत यात्रा तय करना है हमारे Jain Science तक आने के लिये। समझ आ रहा है ना। इतना जैन आचार्यों ने deep study कहना चाहिये study वाली बात तो इसलिये नहीं है क्योंकि यह सब तो जो इसी से सर्वज्ञता सिद्ध की जाती है, कि यह सर्वज्ञ के अलावा एक साथ सब चीजें विश्व के बारे में कोई भी इतनी clearly बता नहीं सकता है।

सर्वज्ञता की सिद्ध

सर्वज्ञ होते हैं? सर्वज्ञ होते हैं? कैसे होते हैं? क्या पता होते है? कि नहीं होते? यह तमाम तरह के बच्चे question करते रहते हैं वो question अज्ञानता से निकलते रहते हैं। एक बार पढें, देखें, समझें तो उन्हें समझ में आ जायेगा कि इस तरीके का बिल्कुल clear classification जब तक कोई व्यक्ति full knowledge नहीं रखेगा किसी object के विषय में, तब तक कर नहीं सकता है और अगर करने की कोशिश करेगा तो कुछ ना कुछ उससे छूट जायेगा। अगर वो सर्वज्ञ नहीं होगा तो science से चीजें छूट रही हैं। उसकी पकड से बाहर हैं इसलिये बस वो पकडता जा रहा है। Elements नये नये discover होते चले जा रहे हैं और उन element की संख्या भी बढती चली जा रही है। अभी स्थूल रूप में भी जो elements हैं chemistry के अनुसार वो भी अभी ending position में नहीं है कि इतने ही elements हैं वो भी बढ़ते चले जाते हैं। समझ आ रहा है कभी 91, कभी 150 तक

जाने कितने elements हो चुके हैं। (बहुत दिनों से तो मैं ही नहीं पढ़ा कि chemistry में क्या हो रहा है तो) अब यह सब चीजें मतलब उसके कोई end नहीं है science तो उसको कहते हैं एक बार perfect बता दिया जाये बस ये है मतलब ये है, बस उसके अलावा कुछ नहीं हो सकता, उसका नाम science है, तो ऐसी science पढो। तो यह science यहाँ हैं तो आप देखें कि इस तरह की science पढने वाला ही वास्तव में scientist है इसलिये आपको समझना चाहिये कि जो लोग इस तरह की knowledge रखते हैं उन्हीं को यह विज्ञान समझ में आता है।

भेद और संघात

आगे पढते हैं-

भेद-संघातेभ्यःउत्पद्यन्ते ॥5.26॥

क्या कहते हैं भेद संघात और भ्य जो लगा हुआ है यह बहुवचन है, सुन रहे हो ना तो बहुवचन से दो चीजों से काम कैसे चलेगा तो यहाँ पर तीसरी चीज और भी है अलग अलग भेद संघात और भेद + संघात इनसे उत्पद्यन्ते माने उत्पत्ति होती है, किसकी? स्कन्धों की, किसकी उत्पत्ति होती है? स्कन्धों की उत्पत्ति के लिये बताया जा रहा है। स्कन्धाश्च जो last में लिखा था तो उसी से इसका एक close relation बन रहा है भेद और संघात और भेद संघात इन तीनों से किसकी उत्पत्ति होती है तो स्कन्धों की उत्पत्ति होती है यह सूत्र का अर्थ आता है। क्या मतलब हुआ इसका, भेद का मतलब हो गया एक तरीके का dividation है ना, जिसे science कहता है fission, nuclear fission और nuclear

fusion दो चीजें आती है ना science में थोडा थोडा याद आता जाता है। तो वो जो fusion, fission की process है वो यह ही भेद संघात union and dividation है ना, तो जो भेद हुआ है भेद जो हुआ है कोई भी स्कन्ध था उसका हमने कुछ part उससे अलग कर दिया। मान लो वो बीस प्रदेश वाला स्कन्ध था हमने उसको दस प्रदेश वाला स्कन्ध बना दिया पांच प्रदेश वाला स्कन्ध बना दिया उसको हमने तोड दिया वो बन गया भेद। संघात क्या हो गया उसी में हमने और मिला दिया। बीस वाले में दस वाला और मिला दिया तो वो हो गया तीस प्रदेश वाला, तो वो जो है उसका संघात हो गया। है ना, इसे हम एक valency के रूप में भी समझ सकते हैं जो बहुत सारी valency का एक combination बनता है आपको बाद में बतायेंगे कभी तो वो संघात जो है इसी तरीके से चलता है तो यह संघात और फिर तीसरी चीज आती है भेद संघात।

मतलब जिसमें भेद भी हो रहा हो और संघात भी हो रहा हो तो ऐसे जो बडे बडे स्कन्ध हैं, किसी स्कन्ध में से हमने कोई निकाला स्कन्ध तो यह भेद हो गया और फिर उसी में हमने दूसरा स्कन्ध और मिला दिया तो यह भेद संघात हो गया। तो यह सब तरीके से स्कन्ध बनते रहते हैं। तो यह सब क्या कहलायेगा? यह सारा का सारा स्कन्ध जो बनता है वह तीन रूपों में बनता रहता है, जल में से जल निकाल लिया, क्या कर लिया हमने एक तरीके से, भेद कर लिया। जल में हमने दूसरा जल मिला दिया क्या कर दिया संघात कर दिया। समझने के लिये और फिर हमने जल में से जल निकाला और थोडा उसमें फिर डाल दिया तो यह भेद भी कर लिया और संघात भी कर दिया। स्कन्ध तो है ही सब स्कन्धों में ही चल रहा है। तो यह भेद अकेला भी काम करता है स्कन्धों के लिये। संघात भी अकेला काम करता है और भेद संघात दोनों भी मिल करके काम करते हैं।

मान लो कोई चार प्रदेशी स्कन्ध है, अब उस चार प्रदेशी स्कन्ध में हमने दो प्रदेश वाला स्कन्ध और मिलाना है तो वह दो प्रदेश वाला जो स्कन्ध उसमें मिल गया तो वह छह प्रदेश वाला जब स्कन्ध बनेगा तो वह स्कन्ध छह प्रदेश वाला चार प्रदेशी और दो प्रदेशी उससे भी मिल करके बन सकता है और जो तीन प्रदेशी स्कन्ध हैं और तीन प्रदेशी स्कन्ध हैं उससे भी मिल करके बन सकता है और जो (एक के साथ नहीं बनेगा एक तो अणु हो जायेगा) तो वह स्कन्ध इसी रूप में बनेगा। इसलिये बताया जा रहा था। यह क्या कहलाया यह संघात इसमें केवल संघात हो रहा है। तो भेद से भी संघात से भी और भेद संघात दोनों से भी यह अच्छी process है इसी से यह सारे के सारे स्कन्ध उत्पन्न होते रहते हैं। अब चाहे आप ठोस उत्पन्न कर लो चाहे द्रव्य उत्पन्न कर लो चाहे आप गैस उत्पन्न कर लो यह तीनों चीजें इन्हीं भेद, संघात और भेद संघात के माध्यम से उत्पन्न होती रहती हैं चाहें बादलों का बनना देख लो, चाहें समुद्र का पानी वाष्प के रूप में बनना देख लो, चाहे अग्नि किसी भी रूप में बदलना देख लो सारा का सारा स्कन्धों का खेल इन्हीं तीनों process से चलता रहता है।

अणु के भेद नही होते है।

ठीक है ना, और अणु अगर बनेगा तो आचार्य कहते हैं

भेदा-दणुः **॥5.27॥**

अणु की उत्पत्ति के लिये एक ही चीज है। संघात से अणु नहीं बनते, भेद और संघात दोनो हो जायेगा तो अणु नहीं बनेगा। अणु की उत्पत्ति केवल भेद से होती है। भेद करते चले जाओ स्कन्ध का भेद किया, भेद किया, भेद किया, भेद किया, स्कन्ध का तोडते तोडते

भेद जहाँ तक हो जायेगा जिसके बाद फिर आप भेद ना कर सको उसका नाम ही अणु है। जहाँ पर भेद करना फिर आपके बस की ना रहे, किसी के बस की ना रहे उसी का नाम अणु है। इसलिये अणु जो होता है वो फिर जो है उसका कोई भी dividation नहीं होता है। ऐसा कोई भी अणु नहीं होता जो कभी भी स्कन्ध के रूप में ना बना हो और जितने भी अणु होते हैं वो सब स्कन्ध के टूटने से ही बनते हैं। समझ में आ रहा है मतलब आज भी इस ब्रह्माण्ड के अन्दर अनन्तो परमाणु घूम रहे हैं। लेकिन वह सब कैसे उन स्कन्धों के टूटने से ही बने हैं। भेद से बने हैं। और जो वो परमाणु हैं वो सब परमाणु अपने आप नहीं बनते हैं इसी तरीके के भेद से बनते हैं और उन परमाणुओं का जो बनना हुआ है वो सब परमाणु पहले स्कन्ध रह चुके हैं। कोई भी परमाणु ऐसे नहीं होते जो स्कन्ध के रूप में ना रहे हों। यह इसी सूत्र से सिद्ध होता है भेदादणु। अणु कैसे बनता है तो भेद से बनता है। आज तक जिस अणु का कोई भी मान लो स्कन्ध ना बना हो तो वह अणु किसी भी रूप से कभी स्कन्ध के रूप में प्रयुक्त नहीं हुआ हो ऐसा कोई भी अणु आचार्यों ने स्वीकार नहीं किया। तो अणु कभी भी जब होगा तो किस रूप में होगा भेद से बनकर के वह अणु की उत्पत्ति होगी वह उसी रूप में होगा।

चक्षु इन्द्रिय का विषय चाक्षुष कहलाता है।

और फिर जो एक चीज बतायी जा रही है-

भेद-संघाताभ्यां चाक्षुष: ॥**5.28**॥

इसमें क्या कहते हैं यह द्‌वितीय विभक्ति का प्रयोग हुआ है। यहाँ पर इस सूत्र में, तो दो

चीजें हैं भेद और संघात। इन दोनों से जो बनता है वो चाक्षुष कहलाता है ? चाक्षुष का मतलब होता है चक्षु इन्द्रिय का विषय। है ना, तो चक्षु इन्द्रिय से जो चीज देखने में आयेगी वो चीज जो है केवल भेद से भी नहीं आयेगी, केवल संघात से भी नहीं आयेगी वो भेद और संघात दोनों से देखने में आयेगी। मतलब कि ऐसे स्कन्ध जिनमें भेद और संघात दोनों हो करके कुछ हुआ हो उसी का नाम भेद संघात होता है, यानि मतलब यह हुआ कि अगर हमने उन स्कन्धों में से भेद कर दिया केवल तो वह भेद भी जो है चक्षु इन्द्रिय का विषय नहीं और उसमें अगर हमनें संघात भी कर दिया तो भी चक्षु इन्द्रिय का विषय नहीं लेकिन भेद और संघात दोनों हो जाते हैं तो वो चक्षु इन्द्रियका विषय बन जाते हैं। है ना, तो यह जो है भेद और संघात के माध्यम से चाक्षुष पुद्‌गल का होना यह यहाँ बताया गया है। सुन रहे हैं अब यह उन स्कन्धों के लिये है जो स्कन्ध हमें दिखायी नहीं दे रहे हों और उनको हमें देखना हो, यानि हमें यहाँ पर यह लगाना पडेगा कि जो अचाक्षुष हों उनको चाक्षुष बनाना हो तो हमें भेद संघात दोनों का उपयोग करना है। जो चाक्षुष हैं उनको चाक्षुष बनाने के लिये तो केवल भेद ही पर्याप्त हैं या संघात ही पर्याप्त हैं। जो अचाक्षुष हैं उसको अगर हमें चाक्षुष के रूप में देखना है तो भेद भी + संघात भी। मतलब पहले हमें किसी से उसको हटाना पडेगा और फिर हमें उसी को किसी में जोडना पडेगा जब यह दोनों चीजें होंगी तो वह चक्षु इन्द्रिय का विषय बन जायेगा।

कैसे बनाओगे बताओ? H2 + O =H2O हैं, अरे इसमें क्या याद करने की चीज है। तो क्या बनाना है तो आप जो है hydrogen के दो molecules लें, तो वो जो है आपके लिये ऐसे हो कि वो पकड में नहीं आ रहे अभी दिखायी नहीं दे रहे हैं। समझ आ रहा है और oxygen का एक लें और दोनों का जब combination हो जायेगा तो H2O हो जायेगा। हैं,

दो परमाणु hydrogen के, एक Oxygen का तो वो H2O बनेगा लेकिन वो परमाणु यदि है Hydrogen के दो परमाणु हैं वो तभी परमाणु कहलायेंगे जब वो आपको दिख ना रहे हों। समझ आ रहा है ना, तो वो भी नहीं दिख रहा Hydrogen और Oxygen का भी एक नहीं दिख रहा और अगर दोनों मिल गये तो आपने चलो जल बना दिया जल दिख गया और सबसे अच्छा उदाहरण यह है देखो इधर देखो अपनी दोनों अंगुलिया घिसो क्या हुआ इधर से जब हमने ऐसे किया यह हो गया उसमें भेद भी हो रहा है और अगले वाले उससे संघात भी होता जा रहा है।आप कहेंगे मेरे हाथ बिल्कुल साफ हैं आपने बिल्कुल sterilized कर रखे हैं sanitize कर रखे हैं अच्छा sterilized भी कर लो तो कोई बात नहीं उसके बावजूद भी जब भी आप ऐसे करोगे तो क्या होगा इसमें जो है अपने आप बत्ती सी बन जाएगी। यह कैसे बन गयी ? यह बन गयी देखो, भेद तो हम कर रहे हैं लेकिन भेद के साथ आगे आगे के जो पुद्‌गल परमाणु हैं उनसे आगे आगे के point से उसका संघात हो जाता है होता चला जा रहा है तब हमें कुछ दिखाई देने लग जाता है। तो भेद और संघात दोनों से अचाक्षुष जो था मैल वो चाक्षुष हो गया। इस तरीके से आप physics का उपयोग करो और इस तरीके से इन पुद्‌गलों के स्वभाव को जानो इसी में आपको अच्छा विज्ञान मिलेगा और अच्छा ज्ञान मिलेगा। ठीक है ना इतना ही पर्याप्त है।